की बात जरूर है कि कायस्थों को आरक्षण देने की बात उठ ही क्यों रही है ? दरअसल, कायस्थ समाज अन्य उच्च जातियों-ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार आदि की तरह सरकारी नौकरियों में आरक्षण का मुखर विरोधी रहा है। आरक्षण के चलते सरकारी नौकरियों में जगह पाने में सबसे ज्यादा नुकसान जिन दो जातियों को उठाना पड़ा है, वे कायस्थ और ब्राह्मण हैं और उनमें कायस्थ अधिक इसलिए कि नौकरी ही उनका प्रमुख पेशा रहा है। आरक्षण के बाद सरकारी नौकरियों में कायस्थों का वर्चस्व टूटा है। इसे इससे ही समझा जा सकता है कि आजादी के वक्त सरकारी नौकरियों में कायस्थों की हिस्सेदारी जहां 52 फीसदी थी, वह आंकड़ा अब घटते-घटते नौ फीसदी पर ठहर जाने का अनुमान है। इसका एक उदाहरण 1977 में विधानसभा में हुई बहस है। एक सदस्य ने सवाल किया कि क्या वजह है कि राज्य के तीन-चौथाई विभागों के प्रमुख या सचिव कायस्थ हैं ? इस पर मंत्री का सीधा-सा उत्तर था कि जब आईएएस या आईपीएस की परीक्षाएं पास कर इतनी संख्या में कायस्थ बच्चे ही आ रहे हों तो इस क्रम को कैसे उलटा जा सकता है ?

लेकिन यह वर्चस्व टूट गया लगता है। एशिया के सबसे बड़े कायस्थ ट्रस्ट का दर्जा प्राप्त कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट (के.पी. ट्रस्ट), इलाहाबाद के अध्यक्ष और अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चौ. जितेन्द्र नाथ सिंह की मानें तो 'सरकारी नौकरियों में

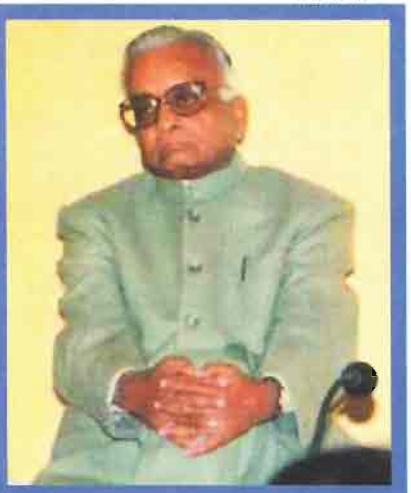

कायस्थ मूल रूप से प्रगतिशील कौम रही है। यह कभी दकियानूस नहीं रही।

शिवचरण माथुर
पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

जातिगत आधार पर आरक्षण व्यवस्था ने कायस्थों की भागीदारी तीन फीसदी कर दी है।' अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के अध्यक्ष और पूर्व सांसद कैलाश ना. सारंग भी कहते हैं कि 'केवल जातिगत आरक्षण की वजह से यह हाल हुआ है।' (देखें बॉक्स: 'धर्म और राजनीति आधारित आरक्षण घातक') कायस्थ सभाएं जातिगत आधार पर आरक्षण की मुखर विरोधी रही हैं। ये मांग करती रही हैं कि या तो आरक्षण खत्म किया जाए या फिर उसे जातिगत आधार पर न कर, आर्थिक आधार पर किया जाए। पिछले दो वर्षों में इस आशय के कई मांग-पत्र इस सभा की ओर से लाखों लोगों के हस्ताक्षर कराकर राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को भेजे जा चुके हैं। निकट भविष्य में इस मुद्दे पर संसद के सामने प्रदर्शन की भी योजना है।

यह दिलचस्प पहलू है कि पिछड़े वर्ग के इस उभार का समर्थन-सहयोग कायस्थों ने आगे बढ़-चढ़कर किया था। दलितों और पिछड़ों के समर्थन में हुए कई आंदोलनों में इस जाति के लोगों की भूमिका अग्रणी रही। इस तरह की भूमिका की वजह भी रही है। दरअसल, कायस्थों की जिस उच्च जाति से सर्वाधिक प्रतिस्पर्द्धा रही है, वह है ब्राह्मण। इसलिए कायस्थ गैर ब्राह्मण आंदोलनों की धुरी रहे। जिस तरह दक्षिण भारत में ब्राह्मण विरोधी आंदोलन में द्रविड़ जातियों ने आगे बढ़कर हिस्सा लिया 19वीं सदी में महाराष्ट्र में इस तरह के गैर-ब्राह्मण आंदोलन की अग्रणी पंक्ति में कायस्थ रहे। बाद में उसकी

दबदबा: फिल्म अभिनय से राजनीति में आए शत्रुघ्न सिन्हा